अध्याय – 15
गायों एवं कुक्कुटों की आवास प्रणाली
(System of Cattle & Poultry Housing)

15.1. परिचय :

पशुशाला का निर्माण किसान को अपनी आवश्यकता एवं पशुओं की संख्या को ध्यान में रखकर बनाना चाहिये। सामान्यतया गौवंशों के लिए भवनों का निर्माण उनको वातावरण की विभिन्न स्थितियों से बचाने के लिए किया जाता है।

आवास व्यवस्था के लिये कुछ अन्य सुझाव– 1. एक युवा गाय को टहलने के लिये कम से कम लगभग 150 वर्ग फुट स्थान की आवश्यकता होती है।

2. प्रत्येक गाय को 25 वर्ग फुट (4 फुट चौड़े एवं साढ़े 6 फुट लम्बे) स्थान की आवश्यकता होती है जिसके अन्तर्गत प्रबन्धक, भोजन पहुँचाने का स्थान तथा आधा केन्द्रीय रास्ता शामिल रहता है।

3. प्रत्येक बछड़े को आवास के लिये 20 वर्ग फुट तथा दौड़ने के लिये 75 वर्ग फुट स्थान की आवश्यकता होती है। 4. दूध निकालने का कमरा इस अवस्था में होना चाहिए कि उसे दूध का रिकॉर्ड रखने के कमरे तक लाने का समय कम से कम हो। रिकॉर्ड रखने के कमरे का नाप 10X10X10 फुट होना चाहिये।

5. एक क्विंटल गेहूँ के भूसे का भण्डार 10 वर्ग फुट स्थान तथा एक क्विंटल दाना 5 वर्ग फुट स्थान घेरता है।

विभिन्न भवनों के निर्माण में इन उपरोक्त सुझावों का लाभ उठाया जा सकता है।

जल सम्बन्धी सुविधायें – पशुओं के लिये दिन का पानी उपलब्ध रहना चाहिये। प्रत्येक पशु के लिये पानी का अलग–अलग प्रबन्ध करना बहुत मंहगा होता है। एक उपयुक्त क्षेत्र में कम लागत से साधारण पानी का तालाब निर्मित करवाना चाहिये। पानी के तालाब के चारों ओर का क्षेत्र ढालयुक्त व पक्का होना चाहिए। तालाब की क्षमता पीने की आवश्यकता एवं सफाई इत्यादि के अनुसार होनी चाहिए।

डेरी फार्म पर आवश्यक भवन – डेरी फार्म पर बनाये जाने वाले भवन निम्न प्रकार है–

(अ) मुख्य भवन	**(ब) सामान्य भवन**
1. पशुशाला (गौशाला)	1. पशु चिकित्सा कक्ष एवं कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र
2. दुग्ध शाला (गौशाला)	2. पशु पकड़ने का बाड़ा
3. सूखी गायों के बाड़े	3. सूखी घास 'हे' का भवन
4. प्रसूती कक्ष	4. भूसा भवन
5. नवजात बच्चों का बाड़ा	5. दाना भवन
6. रोगी पशुओं का बाड़ा	6. साइलेज भवन
7. सांड़ का बाड़ा	7. चारा काटने वाली मशीन का स्थान
8. विभिन्न आयु की बछियों एवं बछड़ों का बाड़ा	8. दाना डालने वाली मशीन के लिये स्थान
	9. पशुओं को अलग रखने का बाड़ा
	10. श्रमिकों के लिये आवास गृह
	11. फार्म प्रबन्धक आदि का आवास गृह

1. पशुशाला (गौशाला) – पशुशाला में प्रत्येक पशु के लिये चारा खाने, पानी पीने व रहने के लिये पर्याप्त स्थान होना चाहिये। चारे की नाद (खोर) की आगे की ऊँचाई एक मीटर होनी चाहिये। हमारे देश में साधारणतया निम्न दो प्रकार की पशुशालायें निर्मित की जाती है।

(अ) एक पंक्ति वाली पशुओं की कम संख्या के लिये– पशु संख्या 10 या 10 से कम होने पर अपनाते है। इससे अधिक व 100 पशु संख्या तक दोहरी पशु पंक्ति विधि अपनाते है।

(ब) दो पंक्तियों वाली – पशुओं की अधिक संख्या के लिये इस प्रकार की पशुशाला भी दो प्रकार की होती है–

(i) मुँह के सामने मुँह

(ii) पूँछ के सामने पूँछ

(i) मुँह के सामने मुँह विधि– इस प्रकार की पशुशाला के निर्माण में, सभी पशुओं का मुँह एक दूसरे के सामने होता है। इसके निम्न लाभ है–1. पशुओं को चारा खाने में सुविधा होती है। 2. एक ही आदमी सभी पशुओं को चारा डाल देता है। 3. पशुशाला की चौड़ाई कम होने के कारण, पशुशाला निर्माण में कम जगह की आवश्यकती होती है।

इस प्रकार से पशुशाला बनाने पर निम्न हानियाँ हैं– 1. पशु चूंकि गोबर व पेशाब, दीवार की ओर करते है, अतः

दीवार शीघ्र गन्दी हो जाती है। 2. पशु चूंकि एक दूसरे के सामने साँस लेते है अतः एक दूसरे से संक्रामक रोग लगने का डर रहता है। 3. गोबर व मूत्र हटाने में इस विधि में अपेक्षाकृत अधिक समय लगता है। 4. पशु को सूर्य का प्रकाश व ताजी हवा, इस प्रकार की पशुशाला बनाने पर, कम मिल पाता है। 5. दूध निकालते समय ग्वालों पर ठीक नियन्त्रण नहीं रखा जा सकता है।

पशुशाला में शाला भवन की आकृतियाँ दो तरह की होती हैं। (1) द्विपंक्ति भवन तथा (2) एक पंक्ति भवन। (a) एक दूसरे की ओर पूँछ (Tail to tail) (b) एक दूसरे की ओर मुहँ (Face to face) दोनों ही प्रकार के शेडों में कुछ गुण तथा कुछ दोष पाये जाते हैं।

(a) एकदूसरे की ओर पूँछ (Tail to tail) नाम के अनुसार इसके बनाने की विधि एवं प्रत्येक पशु के लिए आवश्यक निर्धारित जगह रखी जाती है। भवन की सफाई तथा गायों का दूध निकालने में आसानी रहती है। इसमें दो खोरों के मध्य कम से कम 08–10 मीटर की दूरी रखी जाती है तथा भवन की लम्बाई पशुओं की संख्या पर निर्भर करती है। भवन की अधिकतम लम्बाई 45 मीटर ही रखी जाती है।

गौशाला का निर्माण इस प्रकार होता है कि एक पंक्ति के पशुओं की पूँछ के समान दूसरे पशुओं की पूँछ होती है। जैसाकि चित्र में प्रदर्शित है। पशुशाला निर्माण की यह विधि अपेक्षाकृत अच्छी है।

इस विधि के निम्न लाभ है–

1. पशुओं को सदैव स्वच्छ हवा व धूप मिलती रहती है, अतः पशु का स्वास्थ्य ठीक रहता है।

2. दूध निकालने व गोबर हटाने में सुविधा रहती है व कम समय व श्रम खर्च होता है।

3. पशुशाला की दीवारें खराब नहीं होने पाती।

4. पशुओं को एक दूसरे से बीमारी लगने का भय कम रहता है।

इस विधि में निम्न हानियां है –

1. पशुशाला अधिक जगह घेरती है।

2. पशुशाला में चारा खिलाने में श्रम व समय अधिक नष्ट होता है।

(ब) पूंछ के सामने पूंछ विधि–पशुशाला

1. दीवार की चौ.–0.25 मी.

2. चारा डालने का रास्ता –1.25 मी.

3. नाद की चौड़ाई –1.10 मी.

4. पशु के खड़े होने के स्थान की चौड़ाई –1.10 मी.

5. गोबर मूत्र की नाली –0.50 मी.

6. मध्य का मार्ग –1.85 मी.

पशुशाला की कुल चौड़ाई

= 4.70X2+1.85= 11.25 मी.

पशुशाला की लम्बाई 50 गायों के लिये

= 25X1.20+2.50मी.= 32.50 मी.

पशुशाला का आकार

= 11.25X32.50 = 7312.40 मी.

पशुशाला का निर्माण व्यय = 7312.40 मी.

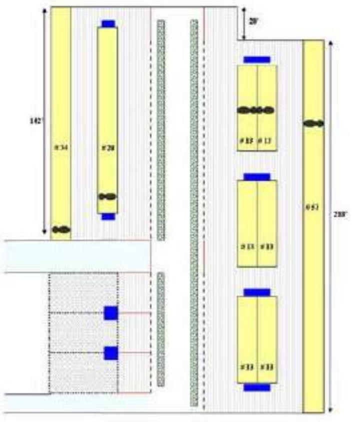

(b) एकदूसरे की ओर मुहँ (Face to face) इस प्रकार के भवन में गाय को स्थान अच्छा मिल जाता है तथा सूर्य का प्रकाश नालियों पर सीधा होने के कारण नालियाँ साफ एवं सूखी रहती है।

1. दीवार की चौड़ाई – 0.25 मी.
2. गोबर उठाने का रास्ता – 1.10 मी.
3. गोबर मूत्र की नाली – 0.50 मी.
4. पशु खड़े होने का स्थान – 1.60 मी.
5. बीच में चारा डालने का रास्ता – 1.50 मी.
6. एक ओर का कुल योग– 4.55 मी., चारे की नाद की कुल चौड़ाई – 1.10 मी. आगे से ऊँचाई 30 सेमी. व पीछे से ऊँचाई 1 मी. रखते है।

इस प्रकार पशुशाला की कुल चौड़ाई

= 4.55+4.55+1.50 = 10.60 मी.

प्रत्येक गाय या भैंस को 1.25 मी. जगह की लम्बाई में रखना चाहिये व नाद के प्रारम्भ में व बाद में 1.25 – 1.25 मी. का रास्ता रखना चाहिये।

अगर गायों की कुल संख्या 50 हो, तो इन्हें आमने–सामने 25–25 की संख्या में कतारों में बांध सकते है।

तब कुल लम्बाई की आवश्यकता = 25X1.2+2.50

= 32.50 मी.

पशुशाला का आकार = 10.60 X 32.50

= 346.45 वर्ग मी.

(2) **एक पली भवन :** इसके अन्तर्गत पशुओं को एक पंक्ति में ही रखा जाता है। इसके बनाने का आर्थिक बोझ दुगुने के लगभग हो जाता है।

पशु भवन फार्म का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग है। अच्छी दूधशाला से पशुओं को आराम मिलता है। जिससे पशुओं का दूध उत्पादन बढता है। इसके साथ–साथ अच्छी तरह से बनी दूधशाला में श्रम की काफी बचत होती है। आमतौर पर एक गाय के लिए प्रतिवर्ष 200 घण्टे श्रम करना पडता है। इस श्रम को कम करने तथा समय की बचत के लिए पशुशाला का भवन इस तरह से बना होना आवश्यक है कि पशुपालक कम से कम समय में अधिक से अधिक कार्य कर अपने समय तथा श्रम दोनों की बचत कर सकें। दूधशाला में बछड़ा गृह (calf pens) भी होना आवश्यक है जिससे उनको दूध निकालने के समय लाने व ले जाने में समय नष्ट नहीं हो। कुछ पशुशालाओं में पशुओं को बाड़े में रखा जाता है तथा दूध निकालते समय ही भवन में लाते हैं। दूध के समय प्रत्येक जानवर का दूध दूध नापघर में रिकार्ड कर लिया जाता है। दूध नापघर पशुशाला के पास ही होना चाहिये।

आकार : पशुशाला में भवन निर्माण के समय पशु की आवश्यकता के अनुसार जगह रखनी चाहिये। एक पंक्ति में पशु को 8–10 वर्ग मीटर के लगभग जगह की आवश्यकता पडती है। पशुशाला की लम्बाई, पशुओं की संख्या पर निर्भर करती है। परन्तु अधिकतम लम्बाई 45 मीटर से अधिक नहीं होनी चाहिये। पशुओं की संख्या अधिक होने पर उन्हें समूह में बांटकर रखा जाता है। शेड की लम्बाई अधिक होने पर दूध तथा चारे के लिए अधिक चलना पडता है।

पशुशाला में गाय के लिए एक गाय से दूसरी गाय के बीच कम से कम 1 से 1.25 मीटर का स्थान रखा जाता है। गाय तथा भैंस को पीछे खडा होने के लिए 2 से 2.5 मीटर की जगह काफी होती है। नाँद (Mangers) को बनाते समय गायों तथा भैंसों के खाने तथा साफ सफाई पर विशेष ध्यान रखना पडता है। नाँद का नीचे का भाग समतल रखना होता है। जिससे इसकी सफाई करने में आसानी रहे। नाँद के निर्माण के समय इन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिये।

1. नाँद की चौडाई 0.60–0.75 मीटर के बीच होनी चाहिये।
2. एक मीटर की लम्बाई पर 1 से 2 से.मी. का ढलान दिया जाना चाहिये।
3. नाँद का तल गाय या भैंस के खडे होने के स्थान से 8–10 से.मी. ऊपर रखा जाता है।
4. पशु की तरफ से नाँद की दीवार की ऊंचाई लगभग 30 से.मी. या इससे बढकर 40 से.मी. रखी जा सकती है।
5. नाँद की सतह समतल तथा साफ होनी चाहिये।
6. नाँद के सभी किनारे गोलाई में रखे जाते हैं।

15.2. कुक्कुट आवास की प्रणालियाँ :

कुक्कुट पालन में अपनी आवश्यकता, धन, झुण्ड का आकार, धन्धे के स्थाई अथवा अस्थाईपन, स्थान एवं जलवायु के अनुसार अनेक प्रकार की आवासीय प्रणालियाँ अपनाई जाती है।

मुख्य प्रणालियां :

1. घर के पीछे कुक्कुट प्रणाली
2. मुर्गियों को खुले में पालने की प्रणाली
3. अर्ध सघन प्रणाली
4. फोल्डिंग यूनिट प्रणाली

5. सघन प्रणाली : यह दो प्रकार की होती है।
   (अ) बैटरी प्रणाली
   (ब) गहरा बिछावन प्रणाली

15.2.1. घर के पीछे कुक्कुट प्रणाली :

यह प्रणाली शहरों में अपनाई जाती है जहाँ भूमि की बहुत कमी होती है। थोडी भूमि होती है उसमें फुलवारी लगाई जाती है। फिर भी मकान के पीछे के हिस्से में जो भी भूमि होती है। उसमें स्थाई प्रकार के भवन बना दिये जाते हैं। इनका आकार कितना भी हो सकता है। पूरी भूमि में शेड बना दी जाती है। पक्षियों के बाहर खुले में घूमने की कोई व्यवस्था नहीं होती। इनके आहार एवं पानी की व्यवस्था भी अन्दर ही होती है। इस प्रकार से रखी जाने वाली मुर्गियों को रसोई के बचे हुए सामान एवं सब्जी की छीलन आदि देकर भी उनकी काफी आहार आवश्यकता पूरी कर सकते हैं। भवन सदैव स्थाई प्रकार के बनाये जाते हैं।

15.2.2. मुर्गियों के खुले में पालने की प्रणाली :

कुक्कुट पालन की यह अतिप्राचीन प्रणाली है जिससे आदिकाल में कुक्कुट पालक अपनाते चले आ रहे हैं। यह प्रणाली वहीं अपनाई जाती हैं जहाँ जमीन की कोई कमी नहीं होती है जहाँ कुक्कुटों को खुला में स्थान मिलता है। वहां साथ–साथ उन्हें काफी मात्रा में हरी शाक, दाने एवं कीट आदि भी मिल जाते हैं। साथ ही मुर्गियों की परभक्षी जन्तुओं संक्रामक रोगों एवं परजीवी से पूर्ण रक्षा की जाती है। परन्तु कुक्कुट पालन के आधुनिक बढते चरण के कारण यह प्रणाली करीब–करीब अप्रचलित सी हो चुकी है।

15.2.3. अर्ध सघन प्रणाली :

यह प्रणाली वहाँ अपनाई जाती है जहाँ पर भूमि सीमित क्षेत्र में उपलब्ध हो। इसमें प्रति मुर्गी 1–2 वर्ग मीटर जगह रखी जाती है।

15.2.4. फोल्डिंग यूनिट प्रणाली :

यह कुक्कुट पालन की एक प्रणाली है। इसके अन्तर्गत वहनीय (Portable) भवनों का निर्माण जो कि छोटी इकाई में बनाये जाते हैं। जिससे मुर्गियों को प्रतिदिन नये स्थानों पर बदलते रहते हैं। मुर्गियों को प्रतिदिन नया स्थान मिलने से घासपात (Herbage) मिलती रहती है तथा भूमि पर मुर्गियों की विष्ठा पूरे फार्म पर समान रूप से वितरित हो जाती है।

परन्तु इस प्रणाली में भवनों के स्थान बदलने में मुर्गियों को आहार एवं जल प्रदान करने में और अंडे संग्रहण में श्रम अधिक बढ जाता है। 25 मुर्गियों वाला भवन सुविधा जनक रहता है। इन भवनों में 1–1.5 वर्ग मीटर प्रति मुर्गी के हिसाब से जगह रखी जाती है। इन 25 मुर्गियों के लिए 1.25 मीटर चौडा तथा 7 मीटर लम्बा स्थान होना चाहिये। जिसमें एक तिहाई क्षेत्र 1.5 × 1.5 वर्ग मीटर भवन हेतु और शेष जगह खुली रखी जाती है जो कि चारों तरफ एवं ऊपर जालियों से घेर ली जाती है।

15.2.5. सघन प्रणाली :

यह प्रणाली वहां अपनाई जाती है जहाँ भूमि बहुत कम अथवा बहुत मंहगी होती है। इसमें मुर्गी पूर्ण रूप से मकान में रहती हैं। इस प्रणाली में खिडकियों की ऐसी व्यवस्था की जाती है ताकि सूर्य की किरणें सीधे भवन के अन्दर फर्श तक पहुँच सके। इसके लिए खिड़कियां खुलने वाली, फोल्ड हो जाने वाली अथवा नीचे इस प्रकार सरक जावें जैसे कि रेल की खिड़की। इस प्रणाली में दो पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं।

(अ) बैटरी अथवा पिंजरा प्रणाली :

चूजे पालने की विधि के समान ही अब अंडे देने वाली मुर्गियों को भी बैटरी या पिंजरा प्रणाली में रखा जाता है। इस पद्धति में प्रत्येक मुर्गी को धातु के बने हुए पिंजरे अथवा खानों में रखा जाता है। एक पिंजरा जिसकी 30 से 40 से.मी. चौड़ाई, 45 से.मी. लम्बाई तथा 30–35 से.मी. ऊंचाई होती है। इस पिंजरे में फर्श तार का बना होता है। जिसमें आगे की तरफ ढाल होता है ताकि अण्डा लुडक कर आगे की तरफ अण्डों के लिए बने हुए स्थान में आ जावें। इन पिंजरों को एक पंक्ति में सटाकर आवश्यकतानुसार लम्बाई में रख सकते हैं। अधिक पिंजरे होने पर एक दूसरे के ऊपर रखकर कई मंजिल का भवन बना लेते हैं। इस प्रकार की व्यवस्था सें अनेक मुर्गियों को बहुत थोड़े ही स्थान में ही रख सकते हैं।

कुक्कुट भवन की यह पद्धति बडे–बडे शहरों के लिए अति उपयोगी होती है। जहाँ भूमि बहुत कीमती है अथवा उपलब्ध ही नहीं है। यह प्रणाली दलदल अथवा नमीं वाले भागों के लिए उपयोगी है। कलकत्ता एवं मुम्बई आदि शहरों की भूमि जो काफी दलदली एवं नम है। वहां पर इस

प्रणाली को अपनाकर कुक्कुट पालन का कार्य सफलता पूर्वक किया जा सकता है। बैटरी अथवा पिंजरा पद्धति से कुक्कुट पालन के निम्न लाभ हैं :

1. मुर्गियों की छटनी जल्दी एवं ठीक प्रकार की जा सकती है।
2. जो मुर्गियाँ अण्डे देना बन्द कर देती है उन्हें जल्दी पहचान व छटनी करके बाजार में बेच कर, अच्छे पैसे कमाये जा सकते हैं।
3. मुर्गियों में अण्डा उत्पादन अपेक्षाकृत अधिक होती है क्योंकि उन्हें संतुलित एवं अधिक आहार मिलता है और पानी भी आहार की तरह हर समय उनकी पहुंच में होता है।
4. प्रति दर्जन अण्डों पर आहार की खपत कम होती है क्योंकि मुर्गी द्वारा खाने वाले पूरे आहार का उपयोग शारीरिक श्रम में न होकर अण्डों की उपज में ही होता है।
5. मुर्गियों के आपस में लड़ने अथवा नोंचने की समस्या नहीं होती।
6. इस प्रणाली में लगभग फर्श स्थल की आवश्यकता एक तिहाई के लगभग कम हो जाती है।
7. मध्यम से भारी आकार की सभी नस्ले इस प्रणाली में ठीक प्रकार रहती है।
8. इस प्रणाली द्वारा कुक्कुट पालन किसी भी प्रकार की जलवायु अथवा मृदा में किया जा सकता है।
9. पिंजरों का लगातार एवं पूरा उपयोग किया जा सकता है अर्थात् छटनी के कारण खाली होने वाले पिंजरे में दूसरी मुर्गी छोड़ी जा सकती है।

बैटरी अथवा–पिंजरा प्रणाली की हानियां :

1. आरम्भ में नई बैटरी अथवा पिंजरे बनवाने में काफी धन खर्च करना पड़ता है जबकि इस प्रणाली में अलग से आहार पात्र, जल पात्र, घौंसले एवं अण्डे देने के स्थान फर्श पद्धति के समान नहीं बनवाने पड़ते।
2. इस पद्धति में मुर्गियों को आहार देने में अधिक सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि बैटरी अथवा पिंजरे में रहने वाली मुर्गियों को विशेष रूप से विटामिन डी एवं तन्तुओं की अधिक आवश्यकता होती है। शेष तत्वों की आवश्यकता अन्य प्रणालियों के समान होती है।
3. इस पद्धति में मुर्गियों का पालन करने में अधिक सावधानी की आवश्यकता है।
4. इस पद्धति में रखी गयी मुर्गियों को वर्ष में 4–5 बार बदलना पड़ता है।

(ब) गहरा बिछावन प्रणाली :

इस प्रणाली में फर्श पर भूसे–बुरादे अथवा पत्तियों की 25–30 से.मी. मोटी बिछावन बिछी होती है। गहरा बिछावन शुष्क कम्पोस्ट के समान होता है। इसको परिभाषा के तौर से इस प्रकार भी कह सकते हैं कि 'गहरी बिछावन' के लिये प्रयोग होने वाली सामग्री का मुर्गियों की विष्ठा सहित एकत्रीकरण करते है। जब तक कि इसकी मोटाई 25–30 से.मी. तक न हो जाये, जिससे बहुत कम सावधानी बरतने पर भी ऐच्छिक परिणाम प्राप्त होते हैं। इसमें 250 मुर्गियों को एक साथ रखा जा सकता है।

आवश्यक मौलिक नियम : गहरा बिछावन प्रणाली के लिये कुछ मौलिक नियम है जिनका पालन करना जरूरी है :

1. एक साथ अधिक संख्या में मुर्गियां नहीं रखनी चाहिये। प्रति मुर्गी कम से कम 1–1.25 वर्ग मीटर और उत्तम 0.75 वर्ग मीटर फर्श स्थल ठीक रहता है।
2. बिछावन को ठीक अवस्था में बनाये रखने के लिये आवश्यक उपाय करते रहना चाहिये।
3. बिछावन शुष्क रहना चाहिये। यह कार्य बहुत आवश्यक है। यदि छत से पानी टपकने के कारण अथवा जल पात्रों के कारण बिछावन भीग जाये तो वह खराब हो जाता हैं। अतः उसे तुरन्त बदल देना चाहिये। बिछावन को शुष्क रखने के सभी आवश्यक उपाय अपनाने चाहिये।
4. बिछावन का विलोडन (Stiring) करते रहना चाहिये। प्रति सप्ताह बिछावन को पलटते रहना चाहिये। इससे बिछावन ठीक अवस्था में रहता है।

गहरी बिछावन तैयार करना : गहरी बिछावन के आरम्भ करने की अवस्था में अनेक सामग्री प्रयोग की जा सकती है, परन्तु सदैव कार्बनिक पदार्थ ही प्रयोग करने चाहिये। साथ ही प्रयोग की जाने वाली सामग्री की कीमत एवं प्राप्ति की सुविधा का भी ध्यान रखना चाहिये। बिछावन में प्रयोग होने

वाले शुष्क घास, मूँगफली के छिल्के, मक्का की कड़बी, मक्का की गुल्ली अथवा पेडों की छाल आदि। इनमें से किसी एक अथवा कई चीजों को मिलाकर बिछावन तैयार किया जाता है। मुर्गीयों की बीट लगातार इसमें मिलती रहती है। बिछावन की पूरी गहराई बनाये रखने के लिये यदा–कदा और समान डाला जा सकता है।

कब आरम्भ करें : गहरा बिछावन तब आरम्भ करें जब जलवायु पूर्ण शुष्क हो और यह अवस्था अगले 2 माह तक भी शुष्क बनी रहे ताकि जीवाणुओं की वृद्धि एवं विकास का भय न रहें। यदि प्रति वर्ष पठोर के तैयार होने पर आरम्भ करें और तब तक चालू रखे जब तक कि वे अण्डे देती रहे।

तराई वाले क्षेत्रों में गहरा बिछावन : जमीन के तल से ऊपर शैड बना कर कुक्कुट पालन सफलता पूर्व किया जा सकता है। इस प्रकार 3–4 फर्श स्थल एक दूसरे के ऊपर बनाकर रख सकते हैं। कभी–कभी सब प्रकार से सावधानी बरतने के बावजूद बिछावन गीला अथवा नम हो जाता है। ऐसी दशा में 0.5 कि.ग्रा. सुपरफास्फेट प्रति 1.75 वर्ग मीटर के हिसाब से फर्श स्थल पर छिड़क देना चाहिये। यदि सुपरफास्फेट उपलब्ध न हो तो बुझा हुआ चूना इसी हिसाब से प्रयोग करना चाहिये। यह बात ध्यान रखने की है कि बिना बुझा चूना कभी प्रयोग नहीं करना चाहिये।

इस प्रणाली के लाभ :

1. **मुर्गियों की सुरक्षा** : गहरा बिछावन जिसमें सघन तारों की जाली लगी होती है अतः इनमें सभी मुर्गियां एवं अण्डें सुरक्षित रहते हैं।

2. **बिछावन आहार प्रदान करने का भी साधन** : यह लिखना आश्चर्यजनक न होगा कि पूर्ण रूप से बना हुआ बिछावन मूर्गियों की आहार की भी कुछ आवश्यकता पूरी करता है। बिछावन से 'पशु प्रोटीन' काफी मात्रा में उपलब्ध हो जाती है।

3. **बीमारियों पर नियंत्रण** : पूर्ण रूप से शुष्क बिछावन जीवाणु हनन की प्रक्रिया करते हैं खूनी दस्त एवं कृमि प्रकोप अच्छे प्रकार के बिछावन वाले घर में मुर्गियों में नहीं पाया जाता।

4. **श्रम की बचत** : मुर्गियों के घर में प्रतिदिन अथवा साप्ताहिक सफाई में काफी श्रम लगता है। परन्तु ठीक प्रकार के गहरे बिछावन अपनाने पर इस प्रकार के श्रम की आवश्यकता पूरे वर्ष नहीं होती। केवल बिलोड़न एवं कभी–कभी कहीं–कहीं के लिये थोड़ी सामग्री डालने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार काफी श्रम की बचत हो जाती है।

5. **मूल्यवान उर्वरक** : बिछावन एक मूल्यवान खाद बन जाता है। एम.सी.आर्डले एवं पाण्डा के मतानुसार 35 मुर्गियां एक वर्ष में लगभग एक टन गहरे बिछावन की उर्वरक तैयार कर देती हैं। इसमें गहरे बिछावन के पूर्ण रूप से तैयार होने (1 वर्ष बाद) के बाद इसमें नत्रजन, फासफोरस एवं पोटाश क्रमशः 3 : 2 : 2 के अनुपात में होती है। इस बिछावन में पोषक तत्वों की मात्रा पशुओं के खाद की अपेक्षा 3 गुनी होती है।

6. जलवायु से रक्षोपाय (Weather safeguard) : बिछावन विभिन्न जलवायु के प्रतिकूल प्रभाव से रक्षक का कार्य करता है। गहरे बिछावन का एक निश्चित तापमान रहता है। ग्रीष्म ऋतु में बहुत अधिक गर्मी होने पर मुर्गीयां बिछावन को खोदकर उसमें बैठती है जिससे उन्हें ठण्ड अनुभव होती है। इसी प्रकार शरद ऋतु में बहुत अधिक ठण्ड होने पर भी मुर्गियां बिछावन को खोद कर बैठती हैं जिससे उन्हें गर्मी अनुभव होती है।

सारांश

पशु–शाला में भवन दो तरह के होते हैं : 1. एक पली तथा 2. द्विपली भवन। एक पली भवन में बनाने का खर्च लगभग दो गुना आता है। अच्छे भवन से श्रम तथा धन दोनों की बचत होती है। पशुओं के भवन की लम्बाई 45 मीटर से अधिक होने से श्रम बढ़ जाता है। कुक्कुटों में जगह के अनुसार आवासीय प्रणालीयां अपनाते हैं परन्तु इन में से गहरा बिछावन प्रणाली को सबसे उपयुक्त माना गया है। गहरा बिछावन में किसान को वर्ष के अन्त में अच्छा खाद एवं मुर्गीयों के लिए सुविधायुक्त होने से पैदावार अच्छी होती है।

प्रश्न :

1. पशुओं में सबसे कम खर्चीला भवन है :
   - (अ) एक पली भवन
   - (ब) द्विपली भवन
   - (स) दोनों
   - (द) कोई भी नहीं
2. मुर्गी में सबसे अच्छा आवास माना गया है :
   - (अ) गहरे बिछावन को
   - (ब) फोल्डिंग यूनिट को
   - (स) घर के पिछवाड़े को
   - (द) अर्ध संघन प्रणाली को
3. सबसे अच्छी मुर्गियों की खाद प्राप्त होती है :
   - (अ) गहरे बिछावन प्रणाली को
   - (ब) घर के पिछवाड़े प्रणाली से
   - (स) अर्ध सघन प्रणाली से
   - (द) फोल्डिंग यूनिट से
4. मुर्गियों में सबसे कम श्रम होता है :
   - (अ) गहरे बिछावन में
   - (ब) घन के पिछवाड़े में
   - (स) फोल्डिंग यूनिट में
   - (द) अर्ध सघन प्रणाली में
5. पशुओं के लिए भवन कितने तरह के होते हैं?
6. खुले भवन की क्या समस्याऐं है?
7. मुर्गियों में कितने तरह के हाउसिंग सिस्टम है? डिप–लीटर हाउसिंग का वर्णन कीजिए।